Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

# "राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परीक्षा दुश्चिंता के प्रभाव का अध्ययन"

**शोध निर्देषक :**
**डॉ. अनिल कुमार**
**(प्रोफेसर)**
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

**शोधकर्ता :**
**ममता कुमारी सैन**
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

**ABSTRACT**

*प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परीक्षा दुश्चिंता के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। दत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में परीक्षा दुष्चिंता मापनी का प्रयोग किया है तथा दत्त विष्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।*

Keywords:- राजस्थान माध्यमिक षिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय माध्यमिक षिक्षा बोर्ड, शैक्षिक उपलब्धि व परीक्षा दुश्चिंता।

## प्रस्तावना :–

अभिभावक ऐसा कुम्हार है जो बड़ी चतुराई से बच्चों को समाजिकता के रंग में रगता है, उन पर अपनी आशाओं और पारिवारिक मूल्यों की मोती बिखेरकर मार्ग प्रदान करता है। अभिभावक में माता का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि माँ तो गर्भ में ही अपनी शिशु को शिक्षा प्रदान करने लगती है। शायद इसी कारण से अभिभावकों की तमाम आकांक्षाएं और इच्छाएं होती हैं, परन्तु इन आशाओं को आज व्यापक करने और इसमें बालक–बालिकाओं की रूचियों, इच्छाओं को दृष्टिगत अवश्य रखना चाहिए। अभिभावक अपने बालकों के लिए अत्यधिक प्रत्याशा रखते हैं और बच्चे उनके प्रत्याशा के अनुसार व्यवहार नहीं कर पाते हैं तो बच्चों में असुरक्षा की भावनाएं उत्पन्न हो जाती है। बालक के अभिभावक अपने बच्चों से यह आशा करने लग जाते हैं कि वह अपनी वस्तुएं सम्हाल कर रखेंगे, स्कूल समय पर जाएंगे, गृह कार्य समय पर करेंगे, परीक्षा में अच्छा से अच्छा अंक हांसिल करेंगे। यदि बालक अपने अभिभावक के इच्छा के अनुरूप कार्य नहीं कर पाते हैं तो उन्हें तिरस्कार और डांट का सामना करना पड़ता है, इससे बच्चों में दुश्चिंता की भावना उत्पन्न होती है। अभिभावकों का साथ होने से उनकी दुश्चिंता को कम किया जा सकता है।

## शोध अध्ययन का औचित्य :–

विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा किये गये शोध में यह पाया गया कि परीक्षा दुश्चिंता की वजह से आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है, इसलिए भी यह विषय शोध के लिये महत्वपूर्ण होता जा रहा है। वर्तमान समय में शिक्षण प्रणाली परीक्षा निर्भर हो गयी है जिससे विद्यार्थियों पर अच्छे अंक लाने का दबाव बना रहता है। अभिभावकों की सहभागिता उतनी नहीं रहती, जितनी होनी चाहिए जिससे बच्चे अपने आपको अकेला महसूस करते हैं और बच्चों में परीक्षा दुश्चिंता बढ़ जाती है। अभिभावक जो अपने छात्र जीवन में वो नहीं कर पाये, उसकी उम्मीद और प्रत्याशा अपने बच्चों से करना चाहते हैं जिससे बालकों में डर, भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़ापन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बालक तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ हद तक परीक्षा दुश्चिंता को कम किया जा सकता है। यही वजह है कि शोधकर्त्री द्वारा इस विषय को वर्तमान समय की मांग समझते हुए शोध समस्या के रूप में चयन किया गया है।

## समस्या कथन :–

**"राजस्थान माध्यमिक शिक्षाबोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक षिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर परीक्षा दुश्चिंता के प्रभाव का अध्ययन"**

## शोध अध्ययन के उद्देष्य :–

1. राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।
2. राजस्थान माध्यमिक षिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

## शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

2. राजस्थान माध्यमिक षिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

## अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले तक सीमित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये राजस्थान माध्यमिक बोर्ड और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

## अनुसंधान विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

## न्यादर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण हेतु राजस्थान के श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के 209 स्कूलों एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के 52 स्कूलों के अन्तर्गत आने वाले उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को न्यादर्ष के रूप में चयनित किया गया है।

## अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नानुसार शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है – मधु अग्रवाल और वर्षा कौशल द्वारा निर्मित छात्र परीक्षा दुश्चिंता परीक्षण Students Examination Anxiety Test (SEAT)] शैक्षिक उपलब्धि न्यादर्श हेतु चयनित स्कूलों के गत वर्ष का परीक्षा परिणामों के अंक।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान मानक विचलन, टी–परीक्षण तथा एफ–परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

## शोध अध्ययन के निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा परिकल्पनाओं के परीक्षण के पश्चात् प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये हैं –

1. निष्कर्ष :–

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के परीक्षा दुश्चिता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध हैं। अध्ययन के दौरान यह देखा गया है कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों के 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा दुश्चिंता तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा दुश्चिंता समान होने का मुख्य कारण परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने की होती है, जो स्वाभाविक रूप से उनमें स्कूल वातावरण, अभिभावकों की आर्थिक सामाजिक स्थिति तथा अध्यापन के स्तर की मनःस्थिति पर निर्भर है। चूंकि परीक्षा दुश्चिंता का सीधा प्रभाव उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर होता है। इसलिए दोनों बोर्डो के स्कूलों के विद्यार्थियों में सार्थक सहसम्बन्ध है।

## निष्कर्ष :–

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है। वर्तमान समय में सभी विद्यार्थियों में उत्तम शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने एवं भविष्य निर्माण की प्रतिस्पर्धा सामान्यतः पाई जाती है, इसलिए उनमें परीक्षा दुश्चिंता स्वाभाविक रूप से विद्यमान होती है, अतः परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

## शैक्षिक महत्व :–

अभिभावक सहभागिता के माध्यम से विद्यालयी वातावरण को उन्नत बनाया जा सकता है, जिसके लिये अभिभावक–शिक्षक वार्तालाप आवश्यक है। इसलिए अभिभावक सहभागिता विद्यालयी वातावरण को सकारात्मक बनाये रखने के लिए शैक्षिक महत्व रखता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची :–


1. सिंह, कुमार लाल (2019), ''बच्चों की शिक्षा में आने वाली बाधाओं में उनके माता–पिता की भागीदारी का विश्लेषण'', इंटरनेशनल जर्नल्स आफ हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च, आई.एस.एस.एन., अंक 9(1), पृष्ठ 313–314.
2. सिंह, डॉ. रेणु (2015), बाल विकास, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ पृ. 153–155 सुरेश, वी.एस. (2013), आदिवासी छात्रों की शिक्षा में परिवार की भूमिका'', पी.एच.डी. शोध प्रबंधन, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टायम, पृष्ठ 239–240.
3. विजया, एस., विजया, आर. एवं कुमार, राजेश एम. (2016), ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन'', रिविव ऑफ रिसर्च, मल्टी डिसीप्लीनरी रिसर्च जर्नल, आई.एस.एन. 249–894, वाल्यूम 5 (12) सितंबर 2016, पृष्ठ 01–04.
4. पचौरी, गिरीश (2008), शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ 250001–37001, पृष्ठ 241–243.